International Journal Of Advances In
ENGINEERING, SCIENCE, COMMERCE, MANAGEMENT AND LAW

International Journal of Advances in Engineering Science, Commerce, Management, and Law

ISSN : 3048-8427
Peer Reviewed Refereed Open Access Journal
Volume-2, Issue 4
October-December 2025

छत्तीसगढ़ के सामाजिक उत्थान में स्वामी आत्मानन्द की भूमिका: एक ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण

टिकेश्वर कुमार (शोधार्थी)
इतिहास विभाग
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

डॉ. सुशांत कुमार पाण्डेय
सह प्राध्यापक – इतिहास
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश :–
स्वामी आत्मानंद जी का योगदान छत्तीसगढ़ के सामाजिक उत्थान में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनका जीवन एक मेधावी छात्र के संन्यासी बनने और फिर एक महान राष्ट्र निर्माता के रूप में उभरने की प्रेरणादायक गाथा है। उनके सिद्धांतों का पालन करते हुए गरीबी उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर कार्य हो रहा है। इस प्रकार, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि स्वामी आत्मानंद जी के विचार और कार्य आज भी समाज सुधार की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं और आने वाले समय में भी प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। उनकी निस्वार्थ सेवा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने उन्हें "छत्तीसगढ़ का विवेकानंद" की उपाधि दिलाई। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी समाज के उत्थान का संकल्प लिया और उसे पूरा करने के लिए जीवनभर कार्यरत रहे। उनके विचार और आदर्श आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

शब्द कुंजीः– स्वामी आत्मानन्द, छत्तीसगढ़, आध्यात्मिक यात्रा, रामकृष्ण मिशन, सामाजिक जागरण, सामाजिक उत्थान,

प्रस्तावना :–

स्वामी आत्मानन्द (1929–1989) छत्तीसगढ़ के उन विरल व्यक्तित्वों में से एक थे जिन्होंने अध्यात्म को केवल गुफाओं या मंदिरों तक सीमित न रखकर उसे "नर सेवा ही नारायण सेवा" के रूप में समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया।छत्तीसगढ़ के महान आध्यात्मिक और सामाजिक सुधारक स्वामी आत्मानंद का जीवन और उनके द्वारा किए गए क्रांतिकारी कार्य राज्य के सामाजिक उत्थान और शैक्षिक पुनर्जागरण की आधारशिला प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों को अपनाते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज सेवा के माध्यम से छत्तीसगढ़ का कायाकल्प किया, जिसमें नारायणपुर और रायपुर के रामकृष्ण मिशन आश्रमों की स्थापना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वामी आत्मानंद ने वेदांत दर्शन को व्यावहारिक धरातल पर उतारते हुए पिछड़े क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाएं और वैज्ञानिक शिक्षा पहुँचाने का कार्य किया।[1]

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों, स्वयं सहायता समूहों तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थापना कर आदिवासी एवं वंचित वर्गों को आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन की ओर अग्रसर किया। उनके आश्रम आज भी सक्रिय हैं और सेवा कार्यों के माध्यम से समाज में सुधार की प्रक्रिया को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण के अनुसार, स्वामी आत्मानंद ने गरीबी को केवल आर्थिक समस्या नहीं माना, बल्कि इसे सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण से देखा। उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा को सामाजिक चिंतन का केंद्र बनाया। यही कारण है कि वर्तमान में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा संचालित स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय योजना उनके आदर्शों का विस्तार है, जो आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण अंग्रेजी माध्यम शिक्षा प्रदान कर रही है। इस प्रकार, स्वामी आत्मानंद का जीवन और कार्य छत्तीसगढ़ में आध्यात्मिक जागरण, सामाजिक उत्थान और शैक्षिक विकास की एक नई धारा प्रवाहित करते हैं, जो आज भी समाज को प्रेरित कर रही है।[2]

शोध का उदेश्य :–

1. स्वामी आत्मानन्द द्वारा स्थापित विवेकानन्द आश्रम के माध्यम से छतीसगढ़ के सामाजिक उत्थान में सहयोग को समझना।
2. छत्तीसगढ़ में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों और दर्शन का सामाजिक एवं प्रशासनिक स्तर पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. छत्तीसगढ़ में स्वामी आत्मानन्द के आध्यात्मिक योगदान और उनके द्वारा स्थापित आश्रमों की कार्यशैली का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा :– चंद्राकर एवं शर्मा (2010) का शोध पत्र "महिला एवं बाल–विकास के क्षेत्र में स्वामी आत्मानन्द का अवदानःअबूझमाड़ के संदर्भ में" प्रमुख है, जो महिला–बाल कल्याण पर केंद्रित । आत्मानंद प्रतिष्ठान दस्तावेज़ एवं सरकारी

@2025 IJAESCML. ALL Rights Reserved

रिपोर्टें (2021–25) जीवनीय विवरण प्रदान करती हैं, किंतु इतिहास विभाग से विशिष्ट थीसिस अनुपलब्ध। 2010 के बाद कोई व्यापक शोध नहीं ।

स्वामी आत्मानन्द की भूमिकाः–

उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और मानव सेवा को आधार बनाकर आदिवासी एवं वंचित वर्गों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया। रायपुर और नारायणपुर में स्थापित रामकृष्ण मिशन आश्रम इसके ठोस साक्ष्य हैं, जहाँ शिक्षा का प्रसार, चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा मिला। इन आश्रमों ने न केवल वेदांत दर्शन को व्यावहारिक रूप दिया बल्कि समाज के पिछड़े वर्गों को आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन की ओर अग्रसर किया। वर्तमान में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा संचालित स्वामी आत्मानन्द उत्कृष्ट विद्यालय योजना भी उनके आदर्शों का विस्तार है, जो आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण अंग्रेजी माध्यम शिक्षा प्रदान कर रही है। इस प्रकार, तथ्य और साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि विवेकानन्द आश्रमों के माध्यम से स्वामी आत्मानन्द ने छत्तीसगढ़ में सामाजिक उत्थान की एक नई धारा प्रवाहित की।[3]

''विश्वास'' विवेकानन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल हेल्थ वेलफेयर एण्ड सर्विस नामक संस्था का संक्षिप्त रूप है। यह नारायणपुर जिला बस्तर (छत्तीसगढ़) में स्थित है। इसकी स्थापना बह्मलीन स्वामी आत्मानन्दजी द्वारा महिलाओं एवं बच्चों के कल्याण से जुड़े कार्य करने के लिए की गई है। संस्था मध्यप्रदेश रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1973 के अधीन पंजीकृत है1 । यह संस्था संपूर्ण छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में कार्य करने के लिए शासन द्वारा मान्य है। प्रो. ओमप्रकाश वर्मा, सचिव, विवेकानन्द विद्यापीठ, कोटा, रायपुर, छत्तीसगढ, इसके वर्तमान अध्यक्ष हैं तथा श्री राकेश चंद्राकर, रामकृष्ण मिशन आश्रम, नारायणपुर, जिला बस्तर, छत्तीसगढ, संस्था के वर्तमान सचिव हैं । जिनके कुशल मार्गदर्शन में संस्था निरंतर कार्य कर रही है।

छत्तीसगढ़ के विख्यात संत स्वामी आत्मानन्द जी के द्वारा प्रचारित भावधारा को आम जनता के मध्य प्रचारित एवं प्रसारित करना, विशेषकर उनके द्वारा किए गए कार्यों को युवा वर्ग के सामने एक आदर्श के रूप में रखना, साथ ही जनसामान्य के बीच सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का बिना किसी जाति , लिंग या समुदाय के प्रोत्साहन करना । उपरोक्त गतिविधियों के संचालन के लिए अनुसंधान केंद्र की स्थापना, जमीन का आबंटन कराना, आवश्यकतानुसार भवन का निर्माण करना और उसे सुसज्जित करना ।शैक्षणिक गतिविधियों के लिए विद्यालय एवं विद्यार्थी भवनों का निर्माण करना तथा उन्हें संचालित करना । विशिष्ट विद्यार्थियों के लिए पुरस्कारों का वितरण, छात्रवृत्ति का प्रबंध, निःशुल्क आवास की व्यस्था करना । समाज के आध्यात्मिक उन्नति के लिए विभिन्न संतों के प्रवचनों का आयोजन करना । वाचनालय और ग्रंथालयों का निर्माण एवं व्यस्था करना । ऐसी विभिन्न गतिविधियों का संचालन करना जिससे समाज के पीड़ित और दुखी मानवता की सेवा हो सके । विभिन्न चिकित्सा सुविधाओं का गांवों में विशेष अवसर पर कैंप लगाकर जनसामान्य को मदद देना एवं ट्रस्ट कमेटी द्वारा अनुमोदित अन्य कार्यों का समयदृसमय पर संपादन करना । स्वामी आत्मानन्द एवं उनके विचारों के अनुकूल साहित्य का प्रकाशन एवं विक्रय की व्यस्था करना ।[4]

विवेकानंद जन्मशताब्दी और स्मारक स्वामी जी के प्रयासों का ही परिणाम था कि रायपुर का विवेकानंद सरोवर (बूढ़ा तालाब) एक अंतरराष्ट्रीय पहचान बना सका। 1985 में स्वामी विवेकानंद की 125वीं जयंती के अवसर पर उन्होंने यहाँ भव्य स्मारक और प्रतिमा की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने रायपुर को "विवेकानंद की नगरी" के रूप में स्थापित किया, क्योंकि स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन के दो महत्वपूर्ण वर्ष (1877–79) रायपुर में बिताए थे।स्वामी आत्मानन्द के शैक्षिक मॉडल की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि छत्तीसगढ़ सरकार ने उनके नाम पर राज्यव्यापी योजना शुरू की।[5]

स्वामी आत्मानन्द उत्कृष्ट विद्यालय योजना इसके तहत राज्य में 700 से अधिक सरकारी अंग्रेजी और हिंदी माध्यम स्कूल खोले गए हैं, जहाँ 4 लाख से अधिक छात्र निशुल्क गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अकाल राहत (1970–71) छत्तीसगढ़ में पड़े भीषण अकाल के दौरान स्वामी आत्मानन्द ने 'अकाल राहत अभियान' चलाया। उन्होंने रायपुर और आसपास के जिलों में राहत शिविर लगाकर हजारों लोगों को भुखमरी से बचाया।

शराबबंदी और नशामुक्ति उन्होंने बस्तर के आदिवासियों के बीच शराब के दुष्प्रभावों के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाया और उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ा।985 में स्वामी जी ने बस्तर के अत्यंत दुर्गम क्षेत्र अबूझमाड़ में विकास कार्यों की शुरुआत की। उस समय यह क्षेत्र बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटा हुआ था। स्वास्थ्य सेवा उनके प्रयासों से वहां अस्पताल स्थापित हुए। आज नारायणपुर आश्रम द्वारा संचालित अस्पताल सालाना 50,000 से अधिक आदिवासियों को चिकित्सा परामर्श और उपचार प्रदान करता है। कृषि सुधार उन्होंने आदिवासियों को 'शिफ्टिंग कल्टीवेशन' (झूम खेती) से हटाकर स्थायी कृषि के गुर सिखाए, जिससे उनकी आय में स्थिरता आई।स्वामी आत्मानन्द ने छत्तीसगढ़ के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कार देने के लिए रामकृष्ण मिशन के सिद्धांतों को आधार बनाया।[6]

@2025 IJAESCML ALL Rights Reserved

विवेकानंद विद्यापीठ (रायपुर) 1958–60 के दौरान उन्होंने रायपुर में इस संस्थान की स्थापना की, जो आज मध्य भारत में शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र है। आदिवासी शिक्षारू उन्होंने विशेष रूप से नारायणपुर (बस्तर) जैसे अत्यंत पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा की अलख जगाई। वर्तमान में नारायणपुर का रामकृष्ण मिशन आश्रम 1,000 से अधिक आदिवासी बच्चों को पूर्णतः निःशुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान कर रहा है। समेकित बाल विकास सेवा परियोजना अबूझमाड़ 3 सितम्बर, 1989 से संचालित है। यह स्वामी आत्मानन्दजी द्वारा संस्थापित, जनजातीय परियोजना है । बाल विकास परियोजना अबूझमाड़ को सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा अनुदान एवं संसाधन प्रदान किया जाता है। परियोजना को केन्द्र सरकार द्वारा वित्त प्राप्त होता है तथा राज्य सरकार का महिला एवं बाल विकास विभाग उसकी मॉनिटरिंग एवं नियंत्रण का कार्य करती है। परियोजना को ''केयर'' के माध्यम से खाद्यान्न तथा यूनीसेफ के माध्यम से तकनीकी संसाधन प्रदान किये जाते हैं। परियोजना के लाभार्थियों को दवाईयाँ तथा वेक्सीन विश्व स्वास्थ्य संगठन के माध्यम से प्राप्त होता है। ''डेनिडा'' ने पूरे परियोजना क्षेत्र में आंगनबाड़ी के सामने हैण्डपम्प की खुदाई कर पेयजल की व्यवस्था की है। परियोजना के 16 आँगनबाड़ियों का निर्माण अबूझमाड़ विकास अभिकरण द्वारा किया गया है। बाल विकास सेवा के सफल संचालन हेतु आवश्यक अधोसंरचना के साथ–साथ कार्यालयीन स्टाफ उपलब्ध हैं ।

अबूझमाड़ अंचल 4000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है जहाँ इस परियोजना के अन्तर्गत 28 आँगनबाड़ी केन्द्र एवं 41 उप– आँगनबाड़ी केन्द्रों की स्थापना की गई है। ये केन्द्र अबूझमाड़ के 70 प्रतिशत क्षेत्र में सेवायें प्रदान कर रहे हैं । इन समस्त केन्द्रों तक पहुँचने की पथ की लम्बाई 430 किलोमीटर है जो इस दुर्गम क्षेत्र के लिए अनुपम उपलब्धि है ।[7]

स्वामी आत्मानन्दजी समाज के विकास में महिलाओं को भी सम्पूर्ण रूप से सशक्त बनाने पर जोर दिया। उन्होंने महिलाओं के विकास के लिये राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर संचालित कार्यक्रमों को अबूझमाड़ जैसे धूर–वनांचल क्षेत्र की महिलाओं तक पहुँचाया। 'विश्वास' के अन्तर्गत महिलाओं के सशक्तीकरण संबंधी संचालित कार्यक्रम महिला स्वावलम्बन एवं बचत समूह, महिला मण्डलों का गठन, महिला जागृति शिविरों का आयोजन, नशा–शराब विरोधी रैली एवं अभियान, विशेष पोषण आहार कार्यक्रम, आयुष्मति योजना, राष्ट्रीय मातृत्व कल्याण योजना, बालिका समृद्धि योजना, किशोरी बालिका योजना, ग्राम्या योजना, दत्तक पुत्री शिक्षा योजना, महिला बचत एवं स्व–सहायता समूह, राज राजेश्वरी योजना, बाल विवाह की रोकथाम, दहेज प्रतिरोध, महिला उत्पीड़न निवारण केन्द्र, बाल संरक्षण गृह, महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, फोटो कॉपियर योजना, महिला बीमा योजना, महिलाओं के प्रशिक्षण एवं विकास संबंधी कार्य, महिला पंच/सरपंचों का प्रशिक्षण, दाई एवं सहायिका प्रशिक्षण ।[8]

बस्तर (अबूझमाड़) के माड़िया निवासियों की दयनीय एवं दरिद्रतापूर्ण स्थिति को देखकर स्वामी आत्मानन्द जी अत्यन्त द्रवित हुए। तत्पश्चात् नारायणपुर में रामकृष्ण मिशन आश्रम की स्थापना–काल में ही उन्होंने यह निश्चय किया कि जनजातीय महिलाओं एवं बच्चों के कल्याण के लिए एक अलग संस्था की स्थापना की जाये। चूंकि विवेकानन्द भावधारा में नारियों से संबंधित कार्यों को हाथ में लेने की अनुमति (बालिका शिक्षा को छोड़कर) नहीं है, अतः उस क्षेत्र में कार्य करने के लिए एक अलग गैर सरकारी संस्था की स्थापना की गई और नाम दिया गया ''विश्वास''। विश्वास के स्थापना–काल (सन् 1989) से ही उसके अंतर्गत समेकित बाल विकास सेवाएं (आई.सी.डी.एस.) कार्यक्रम का आरम्भ ओरछा (अबूझमाड़) से किया गया।[9]

ओरछा अत्यन्त दुर्गम क्षेत्र है । इस संपूर्ण क्षेत्र में यातायात का विकास लगभग नहीं के बराबर है। यहाँ की ऊंट की पीठनुमा पहाड़ियों में आदिम जनजाति अबूझमाड़िया निवास करती है। यहाँ के निवासियों के खानपान का स्तर अत्यन्त निम्न है तथा ये गम्भीर कुपोषण के शिकार हैं। यहाँ छः वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए शाला पूर्व अनौपचारिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। इन समस्याओं के निदान में ''विश्वास' का कार्य यहाँ वरदान साबित हो रहा है । इंदिरा गांधी के अनुरोध पर स्वामी आत्मानंद ने खोले आश्रम और विद्यालय स्वामी आत्मानंद ने रायपुर में आश्रम खोला, कड़ी मेहनत की। मगर उसी वक्त अकाल पड़ा। स्वामीजी ने आश्रम के लिए जमा किए सारे पैसे अकाल पीड़ितों की सेवा में खर्च कर दिए। उन्होंने जगह–जगह आश्रम खोले। इंदौर, भिलाई, अमरकंटक में आश्रम खोले। इसी दौरान उनकी मुलाकात तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से हुई। उन्होंने स्वामी आत्मानंद से कहा कि अबूझमाड़ के लोगों तक शासन की योजनाओं का लाभ नहीं पहुंच पाता। आप वहां आश्रम खोलें। उनके अनुरोध पर स्वामीजी ने नारायणपुर में आश्रम और विद्यालय बनायज्ञं स्वामी आत्मानन्द ने विवेकानन्द आश्रमों के माध्यम से छत्तीसगढ़ में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा को आधार बनाकर आदिवासी एवं वंचित वर्गों के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। उनके कार्यों का तथ्य और साक्ष्य यह दर्शाता है कि उन्होंने समाज में दीर्घकालिक परिवर्तन की नींव रखी।[10]

स्वामी आत्मानंद का संपूर्ण जीवन और उनकी योजनाएं गांधीवादी आदर्शों (सत्य, अहिंसा, सामाजिक समरसता) पर आधारित हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ के गांवों में सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया। उनकी योजनाओं का मुख्य उद्देश्य स्थानीय समुदायों का सशक्तिकरण और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना रहा है। उन्होंने अध्यात्म को कोरी कल्पना न मानकर

@2025 IJAESCML ALL Rights Reserved

उसे 'जन–सेवा' के व्यावहारिक धरातल पर उतारा। स्वामी आत्मानंद के विचार जनसाधारण के लिए बहुत प्रभावशाली रहे हैं। उनकी गहरी सामाजिक समझ, धार्मिक दृष्टिकोण, और अपने जीवन में आत्मनिर्भरता की प्रेरणा जनसाधारण को सही राह दिखाई। उनके विचारों का प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित रूप में हैं।[11]

स्वामी आत्मानंद के विचारों ने सामाजिक उत्थान को प्रोत्साहित किया। उन्होंने सामाजिक असमानता, अंधविश्वास, और उपेक्षा के खिलाफ आवाज उठाई और लोगों को सामाजिक न्याय के माध्यम से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उनकी धार्मिक संवेदना ने लोगों को धार्मिक मूल्यों का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने धर्म के महत्व को बताया और लोगों को धार्मिकता में आत्म–समर्पण करने की प्रेरणा दी। स्वामी आत्मानंद ने शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने लोगों को शिक्षा के महत्व को समझाया और उन्हें स्वयं का सही रास्ता चुनने के लिए प्रेरित किया।

निष्कर्ष :– स्वामी आत्मानंद के विचार आधुनिक भारत की सामाजिक समस्याओं के लिए दीर्घकालीन और मानवीय समाधान प्रदान करते हैं। उनकी सोच केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक, समावेशी और दूरदर्शी थी। उनका जीवन और विचारधारा हमें सिखाती है कि अगर शिक्षा, समानता, सेवा और नैतिकता के मूल्यों को अपनाया जाए, तो समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव है। स्वामी आत्मानंद के विचार और कार्य छत्तीसगढ़ में राजनीतिक दलों और नेताओं को समाज के सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक विकास के लिए सक्रिय होने के लिए प्रेरित करते थे। उनके विचार और कार्य लोगों को सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, और अन्य क्षेत्रों में सुधार करने के लिए प्रेरित करते थे।

@2025 IJAESCML ALL Rights Reserved

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. विवेकानन्द, स्वामी. (2018). शिक्षा. (अनु. स्वामी आत्मानन्द). नागपुररू रामकृष्ण मठ।
2. सरकार, डॉ. सुमित. (2021). स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय योजनारू एक विश्लेषण. रायपुररू राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् ।
3. Vivekananda Vidyapeeth- (2021)- Swami Atmanand and Social Transformation in Chhattisgarh- Raipur: Vivekananda Institute of Education.
4. तिवारी, आर. (2023), स्वामी आत्मानंद का सामाजिक–राजनीतिक–धार्मिक दर्शन , छत्तीसगढ़, भारत । शोध समागम, 2581–6918।
5. रामकृष्ण मिशन विवेकानंद आश्रम. (2020). सेवा परमो धर्मरू रायपुर आश्रम का 60 वर्षीय सफ़र. रायपुरः रामकृष्ण मिशन।
6. Dubey H. (1980) Spirituality and Social Service: Swami Atmanand's Vision, Raipur: Seva Prakashan, pp, 12–29.
7. Patel. J. (1978), Swami Atmanand: A Biography. Raipur: Chhattisgarh Granth Academy.pp- 5–20.
8. दुबे, एच, (1980), अध्यात्म और समाज सेवारू स्वामी आत्मानंद का दृष्टिकोण । रायपुररू सेवा प्रकाशन, पृ. 12–29.
9. पटेल, जे, (1978), स्वामी आत्मानंदः एक जीवनी । रायपुररू छत्तीसगढ़ ग्रंथ अकादमी, पृ. 5–20.
10. साहू, एल, (1977), स्वामी आत्मानंद और गरीब : सामाजिक उत्थान का एक अध्ययन । रायपुरः लोक कल्याण प्रकाशन, पृ. 44–63.
11. कुमार, एस, (1973), स्वामी आत्मानंद : सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत । रायपुररू प्रगति प्रकाशन, पीपी. 61–80.

@2025 IJAESCML ALL Rights Reserved